दिनांक 18 अप्रैल, 2018 को उरीमारी, बड़कागाँव में वीर शहीद सिदो–कान्हू की प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर माननीया राज्यपाल के अभिभाषण के मुख्य बिन्दु:–

- आज वीर शहीद सिदो–कान्हू की प्रतिमा के अनावरण के शुभ अवसर पर आप सभी के बीच सम्मिलित होकर स्वयं को सौभाग्यशाली महसूस कर रही हूँ।
- सर्वप्रथम मैं इस अवसर पर संथाल हूल के अमर महानायकों सिदो–कान्हु, चाँद भैरव समेत अन्य सभी अमर शहीदों और उनके हजारों सहयोगियों के प्रति अपनी श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ।
- वैसे तो स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई 1857 में मानी जाती है, लेकिन इसके पहले ही वर्तमान के झारखंड राज्य के संथाल परगना में 'संथाल हूल' और 'संथाल विद्रोह' के द्वारा अंग्रेजों को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। सिद्धो–कान्हू दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून 1855 को वर्तमान साहेबगंज जिले के भोगनाडीह गांव से प्रारंभ हुए इस विद्रोह के मौके पर सिद्धू ने घोषणा की थी–'करो या मरो', 'अंग्रेजो हमारी माटी छोड़ो'।
- इतिहासकारों के मुताबिक, संथाल परगना के लोग प्रारंभ से ही प्रकृति के प्रेमी और सरल होते थे। इसका जमींदारों और बाद में अंग्रेजों ने इसका खूब लाभ उठाया। इतिहासकारों का कहना है कि इस क्षेत्र में अंग्रेजों ने राजस्व के लिए संथाल, पहाड़ियों तथा अन्य निवासियों पर मालगुजारी लगा दी। इसके बाद न केवल यहां के लोगों का शोषण होने लगा,

बल्कि उन्हें मालगुजारी भी देनी पड़ रही थी। इस कारण यहां के लोगों में विद्रोह पनप रहा था।

- इतिहासकारों के अनुसार, यह विद्रोह भले ही 'संथाल हूल' हो परंतु संथाल परगना के समस्त गरीबों और शोषितों द्वारा शोषकों, अंग्रेजों एवं उसके कर्मचारियों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन था। इस जन-आंदोलन के नायक सिद्धो, कान्हू, चांद और भैरव थे।
- आंदोलन को कार्यरूप देने के लिए परंपरागत शस्त्रों से लैस होकर 30 जून 1855 को संकटग्रस्त गांवों के लोग भोगनाडीह पहुंचे और आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इसी सभा में यह घोषणा कर दी गई कि वे अब मालगुजारी नहीं देंगे। इसके बाद अंग्रेजों ने इन चारों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया परंतु जिस दरोगा को वहां भेजा गया था, संथालियों ने उसकी गर्दन काट कर हत्या कर दी। इस दौरान सरकारी अधिकारियों में भी इस आंदोलन को लेकर भय व्याप्त हो गया था।
- भागलपुर की सुरक्षा कड़ी कर दी गई थी। इस क्रांति के संदेश के कारण संथाल में अंग्रेजों का शासन लगभग समाप्त हो गया था। अंग्रेजों द्वारा इस आंदोलन को दबाने के लिए इस क्षेत्र में सेना भेज दी गई और जमकर गिरफ्तारियां की गई और विद्रोहियों पर गोलियां बरसने लगीं। आंदोलनकारियों को नियंत्रित करने के लिए मार्शल लॉ लगा दिया गया।

आंदोलनकारियों की गिरफ्तारी के लिए पुरस्कारों की घोषणा की गई।

- जब तक एक भी आंदोलनकारी जिंदा रहा, वह लड़ता रहा। अंग्रेजों का कोई भी सिपाही ऐसा नहीं था जो इस बलिदान को लेकर शर्मिन्दा न हुआ हो। इस युद्ध में करीब हजारों वनवासियों ने अपनी जान दी थी। अन्ततः छल-कपट से सिद्धो और कान्हू को भी गिरफ्तार कर लिया गया और फिर दोनों भाइयों को भोगनाडीह गांव में खुलेआम एक पेड़ पर टांगकर फांसी की सजा दे दी गई।
- मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे भोगनाडीह जाकर अमर महानायकों सिद्धो-कान्हू के वंशजों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं उस स्थल पर भी गई हूँ जहाँ इन महानायकों फाँसी दी गई थी।
- सुखद है कि उरीमारी गाँव में ऐसे वीर महानायक की प्रतिमा स्थापित की गई है। यह अत्यन्त ही नेक है। इससे हमारे आनेवाली पीढ़ी को अपने इन महानयकों की जीवनकथा और उनकी देनों को और बेहतर तरीके से जानने का अवसर प्राप्त होगा।
- हमारी वर्त्तमान एवं भावी पीढ़ी बेहतर तरीके से जान सकेंगे कि इतिहास उसी को स्मरण करता है जिन्होंने राष्ट्र के लिए सबकुछ न्यौछावर कर दिया। वे अपने लिए नहीं जिये, वतन के लिए जिये।

- इसलिए मैं कहती हूँ कि अपने लिये तो सभी जीते हैं, जो दूसरों के लिए जीते हैं, उनकी याद सदियों एवं युगों–युगों तक बनी रहती है। हमारी भावी पीढ़ी हमारे योगदानों पर अवश्य मंथन करेगी, जैसा कि हम आज करते हैं। सिद्धो–कान्हू समेत सभी स्वतंत्रता सेनानी इसका उदाहाण है, जिन्होंने समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। इन्हीं सबके बलिदान के कारण आज हमें स्वतंत्र देश का नागरिक कहलाने का गौरव प्राप्त हो रहा है।
- भाइयों एवं बहनों, आज हमारा राष्ट्र तेजी से विकास कर रहा है। यह विश्व में महाशक्ति बनने की दिशा में अग्रसर है। पूरी दुनिया की निगाहें हमारे राष्ट्र की गतिविधियों पर रहती है। राष्ट्र एवं राज्य के विकास के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा कई विकास एवं लोककल्याणकारी योजनायें संचालित है।
- इन योजनायें के तेजी से **implementation** होने पर न केवल आपका विकास होगा, बल्कि राज्य एवं राष्ट्र की भी प्रगति होगी। सरकार इन योजनाओं के **implementation** के प्रति सजग है, इसमें आप सभी का सहयोग भी आवश्यक है। आप सभी योजनायें के प्रति जागरूक हों, ताकि न केवल उन्हें लाभ मिल सके, जो इसके वास्तविक हकदार है, बल्कि इसका तेज गति से **implementation** भी हो। आपकी उन्नति से राष्ट्र

की उन्नति जुड़ी है। आपको खुशहाल देखने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर कार्य किये जा रहे हैं।

- मैं इस अवसर पर कहना चाहूँगी कि आज हम सभी को शिक्षा की दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी भी राष्ट्र के सर्वशक्तिसंपन्न होने के लिए शिक्षा अनिवार्य अवाश्यकता है। शिक्षित समुदाय ही पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं। आप शिक्षित होंगे, तो जागरूक होंगे। स्वयं तो शिक्षित होना ही है, दूसरों को भी पढ़ाई के लिए प्रेरित करना है।
- महिला शिक्षा की दिशा में बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। कदापि किसी के मन में ये बात नहीं नहीं होनी चाहिये कि लड़कियाँ पढ़कर क्या करेगी? इसकी शादी कर देंगे, चूल्हा संभालेगी और खाना बनायेगी। अब वो जमाना गया, महिलायें पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ अब पढ़-लिखकर कई कीर्तिमान स्थापित कर रही है। वे अब समुद्र से आसमान तक अपनी प्रतिभा से कामयाबी हासिल कर अपने समाज एवं राष्ट्र का सम्मान बढ़ा रही है।
- महिलाओं ने अपनी प्रतिभा से अवसर प्राप्त होने पर हर पद को सुशोभित किया है। महिला शिक्षित होंगी तो समाज शिक्षित होगा। कोई महिला शिक्षित रहती है, तो वे अपने पूरे परिवार को शिक्षित बनाने की दिशा में बल देती है। इसलिए बालिका शिक्षा को दरकिनार नहीं करना है।
- मुझे बताया गया कि यहाँ के आस-पास चार ग्रामों की जनसंख्या लगभग दस हजार है और यहाँ शिक्षा एक गंभीर

समस्या है, विशेषकर लड़कियों के लिए। इस क्षेत्र में +2 विद्यालय की स्थापना शीघ्र हो, इसके लिए मैं प्रयास करूँगी। जिला प्रशासन भी सरकार को इस क्षेत्र में शिक्षा की वस्तुस्थिति से अवगत करायें।

- इस अवसर पर मैं यह भी कहना चाहूँगी कि इस क्षेत्र में CCL जैसे औद्योगिक प्रतिष्ठान मौजूद है। सरकार के साथ-साथ उनका भी अहम कर्त्तव्य है कि वे लोगों को न केवल बुनियादी सुविधायें सुलभ कराने हेतु सतत् प्रयत्नशील रहें, बल्कि एक बेहतर जिन्दगी गुजारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे।
- बच्चों को अच्छी शिक्षा सुलभ हो, पानी, बिजली, सड़क के साथ-साथ बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें आदि विकसित करने के क्षेत्र में सरकार के साथ-साथ औद्योगिक घराने भी निरंतर प्रयत्नशील रहे। सबका विकास ही हमारा लक्ष्य है।
- एक बार मैं आप सभी ग्रामवासियों को वीर शहीद सिद्धो-कान्हू की प्रतिमा की स्थापना हेतु बधाई देना चाहूँगी।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!